



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

ऑस्ट्रेलिया: भारत के विकास पथ के लिए एक स्वाभाविक साझेदार

ऑस्ट्रेलिया: भारत के विकास पथ के लिए एक स्वाभाविक साझेदार

संदर्भ

- ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच मजबूत और गतिशील संबंध हैं जो विगत कुछ वर्षों में अत्यधिक विकसित हुए हैं।
- जैसे-जैसे भारत अपनी तीव्र आर्थिक उन्नति जारी रखता है, ऑस्ट्रेलिया एक स्वाभाविक साझेदार के रूप में उभरता है, जो पूरक ताकत और रणनीतिक संरेखण प्रदान करता है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों के बारे में

- ऐतिहासिक संबंध:** भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच ऐतिहासिक संबंध हैं, जो ब्रिटिश शासन के औपनिवेशिक युग से ही चले आ रहे हैं। दोनों राष्ट्र राष्ट्रमंडल का हिस्सा थे, जिसने 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद उनके राजनयिक संबंधों की नींव रखी।
 - स्वतंत्रता के बाद, भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति और ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी गठबंधनों के साथ गठबंधन ने एक कूटनीतिक अंतर उत्पन्न कर दिया।
 - हालाँकि, अलग-अलग रणनीतिक गठबंधनों के कारण शीत युद्ध के दौरान बातचीत सीमित रही, लेकिन 1990 के दशक के उदारीकरण के बाद के युग में संबंधों में अत्यधिक सुधार हुआ।
- राजनीतिक और कूटनीतिक जुड़ाव:** यह रणनीतिक साझेदारी (2009) से आगे बढ़कर व्यापक रणनीतिक साझेदारी (2020) तक पहुँच गया है। प्रमुख माइलस्टोन में शामिल हैं:
 - चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (QUAD):** दोनों देश, अमेरिका और जापान के साथ मिलकर एक स्वतंत्र, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए QUAD में सहयोग करते हैं।
 - 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता:** सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए दोनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्रियों के बीच एक उच्च स्तरीय जुड़ाव।
- आर्थिक और व्यापारिक संबंध:**
 - भारत ऑस्ट्रेलिया का 5वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। संभावना है कि 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार वर्तमान 31 बिलियन डॉलर से बढ़कर 50 बिलियन डॉलर हो जाएगा।
 - ऑस्ट्रेलिया से भारत को प्रमुख निर्यात:** कोयला, शिक्षा सेवाएँ, प्राकृतिक गैस और कृषि उत्पाद।
 - भारत से ऑस्ट्रेलिया को प्रमुख निर्यात:** फार्मास्युटिकल्स, कपड़ा, इंजीनियरिंग सामान और IT सेवाएँ।
 - व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA):** व्यापार और निवेश प्रवाह को और बढ़ाने के लिए बातचीत जारी है।
 - ऑस्ट्रेलिया-भारत आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA):** इसका उद्देश्य टैरिफ को कम करके और आर्थिक साझेदारी के लिए नए रास्ते खोलकर द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देना है।
 - ऑस्ट्रेलिया भारत को महत्वपूर्ण खनिजों, कोयले और शिक्षा सेवाओं का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है।
- पूरक अर्थव्यवस्थाएँ:** ऑस्ट्रेलिया प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जिसमें लिथियम, निकल एवं कोबाल्ट जैसे महत्वपूर्ण खनिज शामिल हैं, जो भारत के विनिर्माण और स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्रों के लिए आवश्यक हैं।
 - चूंकि भारत एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनना चाहता है और नवीकरणीय ऊर्जा में बदलाव करना चाहता है, इसलिए ऑस्ट्रेलिया के संसाधन इन महत्वाकांक्षाओं का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग:**
 - **पारस्परिक रसद सहायता समझौता (MLSA):** यह दोनों देशों को रसद और रखरखाव के लिए एक-दूसरे के सैन्य ठिकानों तक पहुँचने की अनुमति देता है।
 - **साइबर और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी सहयोग:** साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल शासन पर सहयोग को मजबूत करना।
 - **चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (QUAD):** दोनों देश इंडो-पैसिफिक में चीनी प्रभाव का मुकाबला करने के लिए अमेरिका और जापान के साथ हैं।
 - मालाबार, AUSINDEX और AUSTRAHIND जैसे रक्षा अभ्यास: सैन्य अंतर-संचालन और रक्षा संबंधों को मजबूत करने के लिए।
- **सांस्कृतिक संबंध:** ऑस्ट्रेलिया भारतीय छात्रों के लिए एक शीर्ष गंतव्य है, जहाँ 100,000 से अधिक भारतीय ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। हाल की पहलों में शामिल हैं:
 - **भारत-ऑस्ट्रेलिया शिक्षा और अनुसंधान सहयोग:** विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानविकी में अनुसंधान के लिए विश्वविद्यालयों के बीच समझौता ज्ञापन।
 - **मैत्री छात्रवृत्ति कार्यक्रम:** ऑस्ट्रेलिया में अध्ययन करने के लिए भारतीय छात्रों के लिए छात्रवृत्ति।
 - **प्रवासी जुड़ाव:** ऑस्ट्रेलिया में एक बड़ा भारतीय मूल का समुदाय दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु का कार्य करता है।

भविष्य का रोडमैप: विकास के चार 'सुपरहाइवे':

- **स्वच्छ ऊर्जा:** ऑस्ट्रेलिया स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में अग्रणी है और उसके पास भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए संसाधन हैं।
 - यह भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ाने और अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का विस्तार करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता कर सकता है।
- **कृषि व्यवसाय:** कृषि व्यवसाय क्षेत्र सहयोग के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है।
- **स्थायी कृषि और उन्नत कृषि तकनीकों में ऑस्ट्रेलिया की विशेषज्ञता खाद्य सुरक्षा एवं कृषि उत्पादकता बढ़ाने के भारत के प्रयासों में योगदान दे सकती है।**
- **शिक्षा और कौशल:** गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास के लिए भारत की बढ़ती माँग के साथ, ऑस्ट्रेलियाई संस्थान इन जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं।
- **पर्यटन:** दोनों देशों में जीवंत पर्यटन उद्योग है, और पर्यटन आदान-प्रदान को बढ़ावा देने से सांस्कृतिक संबंध मजबूत हो सकते हैं तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

संबंधों में चुनौतियाँ

- **वीजा और आव्रजन नीतियाँ:** कार्य परमिट और छात्र वीजा से संबंधित मुद्दे कभी-कभी टकराव का कारण बनते हैं।
- **चीन का प्रभाव:** दोनों देशों की चीन पर अलग-अलग व्यापारिक निर्भरताएँ हैं, जो उनकी रणनीतिक गणनाओं को प्रभावित करती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण नीतियाँ:** जलवायु प्रतिबद्धताओं और कोयला निर्यात में अंतर चर्चा का विषय बने हुए हैं।

निष्कर्ष

- ऑस्ट्रेलिया की पूरक ताकतें, रणनीतिक संरेखण और मजबूत आर्थिक सहयोग इसे भारत के विकास पथ के लिए एक स्वाभाविक साझेदार बनाते हैं।
- अपनी-अपनी क्षमताओं का लाभ उठाकर एवं प्रमुख क्षेत्रों में अपने सहयोग को गहरा करके, ऑस्ट्रेलिया और भारत आपसी समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं तथा क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान दे सकते हैं।
- चूंकि दोनों देश अपनी साझेदारी को मजबूत करना जारी रखते हैं, इसलिए भविष्य में साझा वृद्धि और विकास की अपार संभावनाएँ हैं।

अतिरिक्त जानकारी

'स्वाभाविक साझेदार' के बारे में

- राजनयिक संबंध:** जिन देशों के भारत के साथ लंबे समय से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक या रणनीतिक संबंध हैं, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रेलिया, उन्हें अक्सर द्विपक्षीय या बहुपक्षीय संबंधों में भारत का स्वाभाविक साझेदार कहा जाता है।
- आर्थिक और व्यापार भागीदारी:** भारत कुछ देशों को व्यापार और निवेश में 'स्वाभाविक साझेदार' के रूप में वर्णित करता है, जब आर्थिक प्राथमिकताएँ संरेखित होती हैं।
 - उदाहरण:** भारत और यूरोपीय संघ को अक्सर स्थायी व्यापार और हरित ऊर्जा में स्वाभाविक साझेदार कहा जाता है।
- रक्षा और सुरक्षा गठबंधन:** रक्षा सहयोग (जैसे कि क्वाड गठबंधन - भारत, यू.एस., जापान और ऑस्ट्रेलिया) में, 'स्वाभाविक साझेदार' क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक सहयोग को दर्शाता है, विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में।
- सांस्कृतिक और सभ्यतागत बंधन:** साझा ऐतिहासिक या सांस्कृतिक संबंध वाले देश, जैसे कि दक्षिण एशिया (नेपाल, भूटान, श्रीलंका) या दक्षिण पूर्व एशिया (इंडोनेशिया, वियतनाम), को प्रायः भारत के स्वाभाविक साझेदार के रूप में संदर्भित किया जाता है।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: उन कारकों की जाँच कीजिए जो ऑस्ट्रेलिया को भारत के विकास पथ के लिए एक स्वाभाविक साझेदार बनाते हैं। आपसी सहयोग के क्षेत्रों और दोनों देशों के लिए संभावित लाभों पर चर्चा कीजिए।

